(v) 1951 के वक्त भारत की कुल आबादी में 12 फीसदी मुसलमान थे।

(vi) हमारे नेतागण धर्मनिरपेक्ष राज्य के हिमायती थे। इनके इस आदर्श की अभिव्यक्ति भारतीय संविधान में हुई है।

(3) रजवाड़ों का विलय :—

⟹ बँटवारे के परिणामस्वरूप विरासत के रूप में हमें जो दूसरी बड़ी समस्या मिली थी, वह थी देसी रजवाड़ों (रियासतों) का स्वतंत्र भारत में विलय करना।

⟹ स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व भारत दो हिस्सों में बंटा हुआ था। एक हिस्से में ब्रिटिश प्रभुत्व वाले भारतीय प्रान्त थे तथा दूसरे हिस्से में देसी रजवाड़े। भारतीय साम्राज्य के एक-तिहाई हिस्से में रजवाड़े कायम थे। प्रत्येक चार भारतीयों में से एक किसी न किसी रजवाड़े की प्रजा थी।

⟹ **समस्या** :— (i) ब्रिटिश सरकार ने भारतीय उपमहाद्वीप की 565 देसी रियासतों को यह अधिकार प्रदान किया था कि वे भारत अथवा पाकिस्तान में स्वेच्छा से सम्मिलित हो जाए या अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रखें। यह अपने आपमें एक गम्भीर समस्या थी। इससे अखण्ड भारत के अस्तित्व पर ही खतरा मँडराने लगा था।

(ii) देसी रियासतों की जनता संविधान सभा में प्रतिनिधित्व एवं राजनीतिक अधिकारों की आकांक्षा प्रकट कर रही थी। कुछ देसी

PANKAJ
Page No.:
Date : / /

रियासतो के शासक महत्त्वाकांक्षी थे जो अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाये रखने के लिए कृत - संकल्प थे।

⇒ **सरकार का नज़रिया :—**

(i) पाकिस्तान राष्ट्र के निर्माता अली जिन्ना देसी रियासतों को पाकिस्तान में मिलने के लिए प्रलोभित कर रहे थे। ऐसी विषम स्थिति में अन्तरिम सरकार के गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने साहस व धैर्य के साथ भारत के एकीकरण का मार्ग प्रशस्त किया।

(ii) उन्होंने देशी रियासतों की भौगोलिक, आर्थिक एवं प्रजा की इच्छाओं को दृष्टि में रखकर नीतिगत कार्य किया और अपनी कुशल व शीघ्र कार्य शैली के फलस्वरूप 15 अगस्त 1947 से पूर्व ही कश्मीर, हैदराबाद, जूनागढ़ और मणिपुर को छोड़कर अन्य सभी देशी रियासतों को भारत में सम्मिलित करने के पक्ष में कर लिया। (सहमति -पत्र को 'इंस्ट्रूमेंट ऑफ़ एक्सेशन' कहा जाता है)

⇒ **जूनागढ़ :—** जूनागढ़ रियासत का शासक पाकिस्तान में सम्मिलित होना चाहता था, परन्तु जूनागढ़ रियासत की जनता भारत में सम्मिलित होने के पक्ष में थी, ऐसी स्थिति में जनता के रोष से भयभीत जूनागढ़ का शासक पाकिस्तान भाग गया तथा जूनागढ़ रियासत का भारत में विलय हो गया।

⇒ **हैदराबाद :—** हैदराबाद का शासक (निजाम) अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाये रखना चाहता था। भारत

पाठ-1

सरकार ने हैदराबाद पर बल प्रयोग किया अन्तत: हैदराबाद के निजाम को विवश होकर 1948 ई. में भारतीय संघ में अपने को सम्मिलित कर लिया।

→ **कश्मीर** :— कश्मीर रियासत के राजा हरीसिंह ने भी प्रारम्भ में अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाये रखने का निश्चय किया, परन्तु पाकिस्तान द्वारा जब बलात् कश्मीर पर अधिकार करने का प्रयत्न हुआ और पाकिस्तान ने कश्मीर पर आक्रमण कर दिया जो महाराजा हरिसिंह ने भारतीय संघ में सम्मिलित होने एवं सैनिक सहायता की माँग भारत सरकार से की।
अन्तत: 26 अक्टूबर, 1947 ई. को कश्मीर के महाराजा हरीसिंह ने औपचारिक रूप से भारतीय संघ में अपने को सम्मिलित कर लिया।

→ **मणिपुर** :— मणिपुर के महाराजा बोधचन्द्र सिंह ने भारत सरकार के साथ भारतीय संघ में अपनी रियासत के विलय के एक सहमति-पत्र पर हस्ताक्षर किए थे। जून-1948 में चुनावों के फलस्वरूप मणिपुर की रियासत में संवैधानिक राजतंत्र स्थापित हुआ। मणिपुर भारत का प्रथम भाग है जहाँ सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के सिद्धान्त को अपनाकर चुनाव हुए।